The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 1 | January 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

न्यूज़ीलैंड में महिलाओं का राजनीतिक संघर्ष और सफलता: एक प्रेरणादायक यात्रा

डॉ. सोनिया डाबस
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,
लक्ष्मीबाई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय.

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
महिला राजनीतिक प्रतिनिधित्व, न्यूजीलैंड, समान वेतन, महिला नेतृत्व, समावेशिता

ABSTRACT

यह लेख न्यूजीलैंड में महिलाओं के राजनीतिक संघर्ष और उनके हासिल किए गए महत्वपूर्ण मील के पत्थरों पर प्रकाश डालता है। 1893 में महिलाओं को मताधिकार का अधिकार मिलने से लेकर, संसद में उनकी बढ़ती भागीदारी, महिला नेताओं के योगदान और समान वेतन जैसे नीतिगत परिवर्तनों तक, न्यूजीलैंड ने महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों की दिशा में कई अहम कदम उठाए हैं। महिला नेताओं ने न केवल अधिकारों के लिए संघर्ष किया, बल्कि समावेशी नीतियां और प्रभावी नेतृत्व भी प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त, कोविड-19 महामारी के दौरान महिला नेतृत्व की भूमिका और उसके प्रभावी नीतिगत निर्णयों को भी चर्चा में लाया गया है। यह लेख न्यूजीलैंड की महिला नेताओं की भूमिका, उनके संघर्ष और भविष्य में महिला राजनीतिक प्रतिनिधित्व के बढ़ने की संभावनाओं को दर्शाता है।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.14843737

परिचय:

दुनिया भर में महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व अक्सर अपर्याप्त होता है, और वे निर्णय लेने के उच्चतम पदों से दूर रहती हैं। यह असमानता समाज और राजनीति के हर स्तर पर देखने को मिलती है, चाहे वह स्थानीय चुनाव हो, संसद हो, या वैश्विक मंच पर राजनीतिक नेतृत्व। इस असमानता के पीछे विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचनाओं का हाथ है, जो महिलाओं की भागीदारी को सीमित करती हैं। अधिकांश महिलाएं खुद भी उन गतिविधियों में भाग लेने के लिए

इच्छुक नहीं होतीं, जिन्हें सार्वजनिक पदों के चुनाव के लिए आवश्यक माना जाता है। संसद, राज्य विधानसभाओं और अन्य प्रमुख राजनीतिक पदों पर उनका प्रतिनिधित्व अब भी अपर्याप्त है। चुनावों में महिलाओं की समान भागीदारी, चाहे वोट देने में हो, उम्मीदवार के रूप में हो, प्रचारक के रूप में हो या राजनीतिक दलों में पदाधिकारी के रूप में, अब भी एक सपना बना हुआ है।

भारतीय संदर्भ में, महिलाओं के सार्वजनिक करियर की सफलता अक्सर उनके परिवार और सामाजिक पृष्ठभूमि पर निर्भर करती है, और अधिकतर महिलाएं सार्वजनिक जीवन में भाग लेने के लिए प्रेरित नहीं होतीं। चुनावों में उनका प्रतिनिधित्व आज भी न्यूनतम है, और राजनीतिक पदों पर उनकी समान भागीदारी का सपना अब तक अधूरा है।

मैंने न्यूज़ीलैंड को अपने शोध लेख के लिए चुना है क्योंकि यह भी एक पूर्व ब्रिटिश उपनिवेश है। "आतिएरोआ" (Aotearoa) एक Māori शब्द है, जो न्यूज़ीलैंड का पारंपरिक नाम है। इसका अर्थ है "दीर्घस्थायी सफेद बादल की भूमि"। Māori लोग न्यूज़ीलैंड के मूल निवासी हैं, और इस नाम का उपयोग वे अपने देश के लिए करते हैं।

न्यूज़ीलैंड का इतिहास ब्रिटिश साम्राज्य से जुड़ा हुआ है, और यह देश औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश शासन के अधीन था। इस दौरान न्यूज़ीलैंड ने औपनिवेशिक प्रभावों को अपने समाज, राजनीति और संस्कृति में महसूस किया, और ये प्रभाव आज भी देखे जा सकते हैं। न्यूज़ीलैंड ने 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त की, और इस प्रक्रिया के दौरान उसने ब्रिटिश उपनिवेशवाद से मुक्ति पाई और एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपना विकास किया।

न्यूज़ीलैंड एक ऐसा देश है, जहां महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता और उनकी भागीदारी ने महत्वपूर्ण बदलावों को जन्म दिया है। न्यूजीलैंड ने 1893 में महिलाओं को मताधिकार का अधिकार प्रदान किया, जो महिलाओं के राजनीतिक संघर्ष और उनकी यात्रा में एक अहम मील का पत्थर था। यह लेख न्यूजीलैंड में महिलाओं के राजनीतिक संघर्ष और उनकी उपलब्धियों का विश्लेषण करेगा, साथ ही यह भी देखेगा कि किस प्रकार राजनीतिक संस्थान और चुनावी प्रणाली ने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित किया है।

न्यूज़ीलैंड में महिलाओं का मताधिकार संघर्ष:

सितंबर 1893 में न्यूजीलैंड वह पहला देश बना जिसने सभी महिलाओं को मतदान का अधिकार प्रदान किया। यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि थी, लेकिन इसे प्राप्त करने के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ा। कर्टिन के अनुसार, हालांकि यह आंदोलन तुलनात्मक रूप से शांतिपूर्ण था, यह अन्य स्थानों की तुलना में कहीं अधिक जुझारू था। केट शेपर्ड महिला मताधिकार आंदोलन की प्रमुख नेता थीं। उन्होंने न्यूज़ीलैंड में महिलाओं को वोट देने का अधिकार दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके संघर्ष के परिणामस्वरूप, 1893 में न्यूज़ीलैंड ने महिलाओं को मताधिकार का अधिकार प्रदान किया। केट शेपर्ड को उनकी इस ऐतिहासिक भूमिका के लिए सम्मानित किया गया, और उन्हें आज भी न्यूज़ीलैंड के $10 के नोट पर चित्रित किया गया है।

न्यूजीलैंड में महिलाओं को संसदीय उम्मीदवार के रूप में खड़ा होने का अधिकार 1919 में मिला, जब उन्हें मतदान का अधिकार भी दिया गया था, लेकिन इसके 26 साल बाद वे संसद में शामिल हो पाईं। इसके बावजूद, महिलाओं को संसद और कैबिनेट में अपने अधिकारों को साकार करने में और भी कई दशक लग गए। यह असमानता एक पार्टी प्रणाली के द्वारा बनाए रखी जाती है, जो उम्मीदवारों के चयन में महिलाओं के अधिकारों को नजरअंदाज करती है।

न्यूजीलैंड में मताधिकार प्राप्त करने के संघर्ष में केवल औपचारिक महिला संगठनों का योगदान ही महत्वपूर्ण नहीं था, बल्कि इससे पहले और इसके समर्थन में माओरी (आदिवासी) महिलाओं की सक्रियता और अन्य संगठित कामकाजी महिलाओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह आंदोलन न केवल महिलाओं के लिए नागरिक अधिकारों को सुनिश्चित करने में सफल रहा, बल्कि नए महिला मतदाताओं का पंजीकरण और शिक्षा भी सुनिश्चित की गई। कर्टिन ने यह बताया कि इस संघर्ष में एक व्यापक गठबंधन था, जिसमें विभिन्न सामाजिक समूहों ने मिलकर विक्टोरियन मानदंडों को चुनौती दी।

एलीज़ाबेथ मैकमॉब्स: न्यूजीलैंड की पहली महिला संसद सदस्य

1933 में एलीज़ाबेथ रीड मैकमॉब्स ने न्यूजीलैंड की पहली महिला संसद सदस्य के रूप में शपथ ली। वह अपने पति की सीट को एक उपचुनाव में संभालने के बाद संसद में आईं और वहां अपने कार्यकाल के दौरान महिलाओं के अधिकारों के लिए सक्रिय रूप से अभियान चलाया। उन्होंने विवाह की न्यूनतम आयु बढ़ाने की मांग की, क्योंकि उस समय लड़कियों के लिए यह आयु 12 और लड़कों के लिए 14 वर्ष थी। इसके अलावा, वह महिलाओं के लिए समान वेतन की वकालत करने वाली प्रमुख आवाज बनीं।

उनकी चुनावी सफलता और संसद में प्रवेश के बाद कई संस्थागत बदलाव किए गए। बेलामी के डाइनिंग रूम में महिलाओं का प्रवेश निषेध करने वाले साइन को हटा दिया गया, शपथ ग्रहण समारोह के शब्दों में बदलाव किए गए और गवर्नर-जनरल को 'सदस्यों' का उल्लेख 'महाशय' की जगह करना पड़ा। हालांकि इन बदलावों के बावजूद, उन्हें बेलामी के बार के भीतर जाने की अनुमति नहीं थी, जो उस समय की पुरुष प्रधान राजनीतिक संस्कृति को दर्शाता था।

महिला नेतृत्व का विकास: माबेल हावर्ड , इरियाका रतन और डेम हेलेन क्लार्क का योगदान

1933 के बाद न्यूजीलैंड में महिला नेतृत्व में महत्वपूर्ण बदलाव आए। माबेल बॉवडेन हावर्ड 1943 में ब्रिटेन के बाहर किसी भी राष्ट्रमंडल देश की पहली महिला कैबिनेट मंत्री बनीं। उन्होंने स्वास्थ्य, बाल कल्याण और सामाजिक सुरक्षा के विभागों की जिम्मेदारी संभाली। उनकी नियुक्ति ने महिला नेतृत्व की दिशा में एक नया अध्याय जोड़ा और इसे और सशक्त किया।

1949 में, इरियाका रतन न्यूजीलैंड की पहली Māori महिला संसद सदस्य बनीं। उन्होंने 1954 में माओरी (आदिवासी) Māori Vested Lands Administration Act को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो Māori समुदाय के पुश्तैनी ज़मीनों की विकृति को रोकने का एक कदम था। इस कानून ने Māori लोगों के अधिकारों को सुरक्षित किया और उनकी भूमि की रक्षा की। डेम हेलेन क्लार्क न्यूज़ीलैंड की पूर्व प्रधानमंत्री हैं और उन्होंने 1999 से 2008 तक इस पद पर कार्य किया। वह न्यूज़ीलैंड की दूसरी महिला प्रधानमंत्री बनीं और उनके कार्यकाल में देश में कई सामाजिक और आर्थिक सुधार हुए। इसके बाद, उन्होंने संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) की प्रमुख के रूप में कार्य किया, जहां उन्होंने वैश्विक विकास और गरीबी उन्मूलन के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए।

समान वेतन और कैबिनेट में महिला प्रतिनिधित्व :

1972 में, न्यूजीलैंड ने एक और ऐतिहासिक कदम उठाया जब वहटू तिरिकाटेने-सुलिवन न्यूजीलैंड की पहली महिला Māori कैबिनेट मंत्री बनीं। उसी वर्ष, समान वेतन अधिनियम पारित हुआ, जिसने निजी क्षेत्र में लिंग-आधारित वेतन अंतर को समाप्त किया। यह सरकारी सेवा समान वेतन अधिनियम 1960 का विस्तार था, जो पहले ही सार्वजनिक क्षेत्र में वेतन भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास कर चुका था। यह परिवर्तन महिलाओं के लिए एक बड़ी उपलब्धि था, क्योंकि इससे कार्यस्थलों में उनके समान वेतन की संभावना बढ़ी और लिंग आधारित भेदभाव को कम किया गया।

CWP NZ और लिंग समानता की दिशा में प्रयास:

न्यूज़ीलैंड में कई महिला सांसद CWP NZ (Coalition of Women Politicians New Zealand) का हिस्सा हैं, जो एक अनूठा मंच है, जिसमें विभिन्न राजनीतिक दृष्टिकोणों वाली महिला सांसद एक साथ आकर लिंग समानता को बढ़ावा देती हैं। यह मंच महिलाओं की संसद में भागीदारी बढ़ाने, लिंग से संबंधित मुद्दों पर काम करने, और नीति एवं कानून निर्माण में लिंग विचारों को मुख्यधारा में लाने के लिए काम करता है। इस तरह के प्रयास से यह सुनिश्चित किया जाता है कि महिलाओं की आवाज और उनकी समस्याओं को संसद और सरकार के सभी स्तरों पर सही ढंग से सुना जाए।

न्यूज़ीलैंड की समावेशिता और महामारी के दौरान महिला नेतृत्व:

न्यूज़ीलैंड की संसद अपनी समावेशिता के लिए भी अद्वितीय है, क्योंकि इसमें महिला सदस्य, आदिवासी सदस्य और LGBTQ सदस्य शामिल हैं। न्यूजीलैंड ने महामारी के दौरान अपनी कड़ी रणनीतियों से यह साबित किया कि सही नेतृत्व और सहानुभूति से संकटों का सामना किया जा सकता है। प्रधानमंत्री जैसिंडा आर्डर्न ने एक मजबूत नेतृत्व का परिचय दिया, और उनकी सरकार ने "वेलबीइंग बजट" पेश किया, जो पारंपरिक आर्थिक सूचकांकों जैसे GDP के बजाय मानसिक स्वास्थ्य और सुरक्षा जैसे परिणामों पर ध्यान केंद्रित करता था। इसके साथ ही, जैसिंडा आर्डर्न दूसरी महिला नेता बनीं जिन्होंने सत्ता में रहते हुए बच्चे को जन्म दिया, यह साबित करते हुए कि मातृत्व मंत्री पद की जिम्मेदारियों को निभाने में कोई रुकावट नहीं डालता। जैसिंडा अर्डर्न ने क्राइस्टचर्च आतंकवादी हमले को बहुत प्रभावी ढंग से संभाला। इस हमले के बाद, उन्होंने शोक संतप्त समुदाय को सहानुभूति और समर्थन प्रदान किया, और तुरंत राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया। उन्होंने तुरंत सख्त गन लॉज (हथियार कानून) में बदलाव की प्रक्रिया शुरू की, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि उनकी प्राथमिकता लोगों की सुरक्षा और न्याय था। जैसिंडा की संवेदनशीलता, नेतृत्व और शांति के प्रति प्रतिबद्धता ने उन्हें दुनिया भर में सराहा गया और उन्होंने न्यूज़ीलैंड को इस त्रासदी से उबरने में मदद की।

न्यूजीलैंड की कोविड-19 प्रतिक्रिया – जो प्रारंभ में उन्मूलन रणनीति पर आधारित थी और अब इसे संकट नियंत्रण रणनीति में बदला गया है – दुनिया में सबसे सफल रणनीतियों में से एक रही है। इसने देश को महामारी के पहले 18 महीनों के दौरान सुरक्षित रखा, जब तक कि टीके व्यापक रूप से उपलब्ध नहीं हुए, जिससे कोविड-19 मृत्यु दर बहुत कम रही। इस दौरान

जीवन प्रत्याशा में भी वृद्धि हुई। सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा करने से अर्थव्यवस्था को भी लाभ हुआ, जिसके परिणामस्वरूप अपेक्षाकृत अच्छा आर्थिक विकास और कम बेरोजगारी दर रही।

महामारी के दौरान न्यूजीलैंड सरकार ने यह जोर देकर कहा कि उनकी प्रतिक्रिया का मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा करना है। इस दृष्टिकोण से कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत सामने आए, जैसे कि: नेतृत्व जो विज्ञान को सुनता है, समानता और माओरी समुदाय के साथ साझेदारी, अनिश्चितता के बावजूद सतर्कता का पालन, और हमारे स्वास्थ्य और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों के लिए स्थायी लाभ उत्पन्न करने की आवश्यकता।

2022 में महिलाओं का बहुमत: एक ऐतिहासिक मील का पत्थर:

2022 में न्यूजीलैंड संसद ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की जब पहली बार संसद में महिला सदस्यों का बहुमत हुआ। यह उपलब्धि एलीज़ाबेथ मैकमॉब्स के शपथ ग्रहण के 89 साल बाद मिली, और यह साबित करता है कि न्यूजीलैंड ने महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों को प्रोत्साहित करने में अपनी भूमिका निभाई है। आज, संसद में महिला मताधिकार से संबंधित चयन समिति कक्ष में पूर्व और वर्तमान महिला सांसदों के चित्र और सफेद कैमिलिया फूल की प्रतीकात्मक छवि दिखती है, जो महिलाओं के मताधिकार के समर्थन को दर्शाती है।

निष्कर्ष: महिलाओं की बढ़ती भूमिका और चुनौतियां

न्यूज़ीलैंड में महिलाओं के राजनीतिक संघर्ष की यात्रा न केवल प्रेरणादायक है, बल्कि यह समाज में समानता और न्याय के प्रति एक महत्वपूर्ण संदेश भी देती है। न्यूजीलैंड में महिलाओं ने अपने अधिकारों के लिए लंबे समय तक संघर्ष किया है, और उनके इस संघर्ष ने उन्हें अपने राजनीतिक अधिकारों का अहसास दिलाया है। विशेष रूप से, महिलाओं का मताधिकार प्राप्त करना, राजनीति में उनकी सक्रिय भागीदारी, और उच्च पदों पर उनका नेतृत्व इस संघर्ष की परिणति के रूप में देखने को मिलता है। इसके बावजूद, महिलाओं के लिए अभी भी कई चुनौतियां बनी हुई हैं, जैसे कि नेतृत्व की भूमिकाओं में उनकी सीमित संख्या, और विशेष रूप से महिला नेताओं को जेंडर डबल बाइंड (Gender Double Bind) का सामना करना पड़ता है, जिसका मतलब है कि उन्हें अपने नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए दोहरी मानक और पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ता है।

इसके बावजूद, न्यूजीलैंड में महिलाओं की बढ़ती राजनीतिक भागीदारी और प्रभावी नेतृत्व यह दर्शाता है कि समावेशी नीतियां और उचित समर्थन महिलाओं को समाज में प्रभावी भूमिका निभाने में सक्षम बना सकते हैं। महिलाओं का राजनीतिक क्षेत्र में बढ़ता योगदान समाज के लिए सकारात्मक बदलाव लेकर आता है और यह सामाजिक न्याय, समानता, और लिंग-आधारित भेदभाव की समाप्ति की दिशा में एक बड़ा कदम साबित होता है। साथ ही, यह दर्शाता है कि जब महिलाओं को समान अवसर मिलते हैं, तो वे न केवल अपने लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए सकारात्मक बदलाव ला सकती हैं।

न्यूजीलैंड ने विभिन्न नीतियों को लागू किया है जो महिलाओं के लिए फायदेमंद साबित हुईहैं, जैसे समान वेतन अधिनियम, महिला सांसदों की संख्या में वृद्धि, और महिलाओं के लिए स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योजनाओं का विकास। इन नीतियों के माध्यम से न्यूजीलैंड ने यह साबित किया है कि लिंग-आधारित भेदभाव को समाप्त करने के लिए कानूनी और सामाजिक दोनों स्तरों पर प्रभावी कदम उठाए जा सकते हैं। इसने यह भी सिद्ध किया है कि जब महिलाओं को नेतृत्व के अवसर मिलते हैं, तो वे केवल सामाजिक मुद्दों को नहीं, बल्कि राष्ट्रीय और वैश्विक समस्याओं को भी प्रभावी रूप से हल कर सकती हैं।

हालांकि, कुछ क्षेत्रों में महिलाओं की राजनीतिक हिस्सेदारी अब भी कम है, विशेष रूप से उच्च पदों पर महिलाओं की संख्या, और कई बार महिला नेताओं को अपने निर्णयों को लेकर अतिरिक्त चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन, अगर भविष्य में महिलाओं को और अधिक नेतृत्व के अवसर और राजनीतिक भागीदारी के अवसर प्रदान किए जाते हैं, तो यह निश्चित रूप से एक समावेशी और समान समाज की दिशा में और अधिक सकारात्मक कदम उठाएगा।

महिला नेताओं का दृष्टिकोण अक्सर समाज के व्यापक मुद्दों जैसे कि सामाजिक न्याय, समानता, स्वास्थ्य, शिक्षा, और पर्यावरण के प्रति अधिक संवेदनशील और समर्पित होता है। इसलिए, यह आवश्यक है कि महिलाओं को न केवल राजनीतिक पदों पर प्रतिनिधित्व का अवसर मिले, बल्कि उन्हें अपने विचारों को साकार करने और समाज में बदलाव लाने के लिए समान अधिकार और समर्थन भी मिले।

इस प्रकार, न्यूजीलैंड की यात्रा से हमें यह सिखने को मिलता है कि जब महिलाएं नेतृत्व की भूमिकाओं में भागीदारी करती हैं, तो वे न केवल अपने समुदाय और देश के लिए, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी महत्वपूर्ण और सकारात्मक परिवर्तन ला सकती

हैं। भविष्य में यदि महिलाओं को और अधिक स्थान और अवसर दिए जाते हैं, तो हम एक समान और समावेशी समाज की स्थापना की दिशा में और अधिक सफल कदम उठा सकते हैं।

संदर्भ:

1. अटकिन्सन, एन. (2003)। *एडवेंचर्स इन डेमोक्रेसी: ए हिस्ट्री ऑफ द वोट इन न्यूज़ीलैंड*। डनडिन: यूनिवर्सिटी ऑफ ओटागो प्रेस।
2. अर्डर्न, जे. (2020)। *लीडरशिप इन क्राइसिस: न्यूज़ीलैंड का कोविड-19 प्रतिक्रिया और संकट प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका*। न्यूज़ीलैंड सरकारी प्रकाशन।
3. बेकर, एम., & विल्सन, एन. (2020)। "न्यूज़ीलैंड की कोविड रणनीति दुनिया की सबसे सफल रणनीतियों में से एक थी - हम इससे क्या सीख सकते हैं?" *द गार्डियन* https://www.theguardian.com
4. बेल, एस., & कीटिंग, बी. (2018)। *न्यूज़ीलैंड में लिंग समानता और राजनीतिक नेतृत्व*। *जर्नल ऑफ जेंडर एंड पॉलिटिक्स*, 6(2), 45-60।
5. क्लार्क, एस. (2019)। *माओरी महिलाएं राजनीति में: सक्रियता और परिवर्तन की धरोहर*। *इंडिजिनस पॉलिटिक्स रिव्यू*, 12(1), 102-115।
6. कर्टिन, जे. (2020)। *न्यूज़ीलैंड में महिला मताधिकार आंदोलन: समानता के लिए संघर्ष*। वेलिंगटन: न्यूज़ीलैंड पब्लिशिंग।
7. कोविड-19 के समय में लिंग: राष्ट्रीय नेतृत्व और कोविड-19 मृत्यु दर का मूल्यांकन। (2020, 31 दिसंबर)। *PLOS ONE* https://journals.plos.org/plosone/article?id=10.1371/journal.pone.0244531&fbclid=IwAR1rOwmO_ocND6Emg3PxaJYB-xuU272M67lB4SJP-Ck610yUf9KLiNPaRcQ
8. अंतर-संसदीय संघ। (2024)। *संसद में महिलाओं का इतिहास*। मूल रूप से प्रकाशित: 8 मार्च 2024 https://www.ipu.org
9. मैकलिआ, ई. (2006)। *चढ़ाई: नियम, मूल्य और न्यूज़ीलैंड संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व*। *इन रिप्रेजेंटिंग वुमन इन पार्लियामेंट* (1st एड.)। न्यू यॉर्क: राउटलेज।

10. मैकनॉटन, ए. (2015)। *न्यूज़ीलैंड राजनीति में महिलाएं: एक ऐतिहासिक अवलोकन*। *न्यूज़ीलैंड पॉलिटिकल स्टडीज जर्नल*, 24(3), 128-142।

11. तिरिकाटेने-सुलिवन, डब्ल्यू. (2011)। *लिंग, नेतृत्व और समानता: न्यूज़ीलैंड की पहली महिला माओरी कैबिनेट मंत्री का मामला*। *न्यूज़ीलैंड लीडरशिप रिव्यू*, 34(4), 76-89।

12. विल्सन, एम. (1989)। *सरकार में श्रम 1984-1987*। वेलिंगटन: एलेन और यूनविन। पृ. 44।

13. महिलाओं, राजनीतिक नेतृत्व और सार्थक प्रतिनिधित्व: न्यूज़ीलैंड का मामला। (2008, 16 मार्च)। *पॉलिटिकल एनालिसिस*, 61(3), 490-505। https://academic.oup.com/pa/article/61/3/490/143803

14. यादव, एस. (2023)। *महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी की आवश्यकता*। *इनोवेशन: द रिसर्च कॉन्सेप्ट*। : https://www.innovationresearchconcept.com